RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में जाति व्यवस्था

डॉ. इन्नुस एस. शेख
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा

प्राचीन काल से लेकर आज तक समाज में जाति व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। व्यक्ति की जाति का सामाजिक स्तर उसके जन्म के आधार पर माना गया है। प्राचीन काल में गुण कर्म पर आधारित समाजहित के लिए निर्धारित व्यवस्था विकृत होकर जातिव्यवस्था में परिवर्तित हुई। भारतीय समाज आज भी उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग इन तीन वर्गों में विभाजित है। समाज में व्यक्ति के कर्म और व्यवसाय के आधार पर उसकी जाति को निर्धारित काया जाता है और इसमें सवर्ण जाति के लोग निम्न जाति से अपनी सेवा कर लेते हैं। समाज जीवन का प्रमुख आधार स्तंभ जाति व्यवस्था रहा है, जिसके अंतर्गत हमेशा से दलित, पीडित निम्नजातियां अमानवीय शोषण का शिकार रही है। स्वातंत्र्योत्तर काल में शिक्षा, नगरीकरण, औद्योगिकरण, व्यक्ति स्वातंत्र्य, सामाजिक मान्यताएं आदि के कारण जाति व्यवस्था के बंधनों एवं परंपराओं में परिवर्तन होता नजर आ रहा है। परंतु गांवों में अशिक्षा, अज्ञान, रूढि, परंपरा और सामाजिक बंधनों के कारण जाति व्यवस्था आज भी जीवित है। उनकी मानसिकता में अतनी जल्दी परिवर्तन आना असंभव है।

➢ जातीयता और जातीय संघर्ष

भारतीय समाज में प्रचलित जाति व्यवस्था ने जातिवाद, जाति भेद, जाति प्रथा और जातीय संघर्ष को जन्म दिया है। उच्च जातियों ने सदैव अपनी जाति को प्रबल और ठोस रूप में बनाए रखने का प्रयास किया है। परंतु इसी जातिव्यवस्था ने मध्य और निम्न वर्गीय समाज के व्यक्तियों को हमेशा अपने अधिकारों से वंचित रखा है। और यही ''अपनी मान्यता बनाए रखने का उच्च जातियों का यह प्रयत्न ही जाति संघर्ष को उत्पन्न करता है।''[1] **(डॉ.राम आहुजा—भारतीय सामाजिक व्यवस्था, पृ.280)** शोषण, आर्थिक परेशानियां और वंचनाओं के कारण उत्पन्न जाति संघर्ष तथा अपनी ही जाति में सामूहिक धार्मिक, सामाजिक कार्यों और नेतृत्व की वजह से उत्पन्न जाति संघर्ष के सबसे अधिक और अच्छे उदाहरण आज के समाज में हैं। उच्चवर्गीय जातियां महेशा अपने से निम्न जाति के लोगों का शोषण करती है। मात्र वर्तमान परिवेश में जाति व्यवस्था के बंधन ढीले पड रहे हैं तो दूसरी ओर जातीय संगठनों द्वारा जातीयता की भावना उग्र रूप से सामने आ रही है। इसी भावना ने व्यक्ति को स्वार्थी, कुटिल, संकुचित और ईर्ष्यालू बना दिया है। इसी कारण समाज सीमित बनाए रखने का प्रयास करता है। इसी वजह से जातियों के बीच जातीयता की खाई और जातीय संघर्ष बढते जा रहे हैं, और आए दिन इसे उत्तेजना मिल रही है।

'झीनी झीनी बीनी चदरिया' उपन्यास में अपनी जाति—बिरादरी वाले परंतु अलग—अलग पंथ के दो समुदायों में मस्जिद और कब्रस्तान की जगह को लेकर संघर्ष छिड गया है। क्योंकि दो—ढाई सौ वर्ष पहले हाजी अमीरूल्ला के दादा के कोई भाई सुन्नी से शिया पंथीय हो गए थे। परिणामस्वरूप इनका दो खानदानों में विभाजन हो गया है। आगे चलकर मस्जिद और कब्रस्तान की जगह को लेकर इन दो खानदानों में झगडा उत्पन्न होता है। जैसे—जैसे आबादी बढती गई और बनारस का विकास होते गया तो वहां की जगह की कीमतें बढती गई और इसी जगह पर कब्जा करने की वजह से दोनों खानदान में जाति को आधार बनाकर संघर्ष निर्माण हो गया। क्योंकि वहां सुन्नियों के किन्हीं महान हस्तियों की कब्रे हैं और शिया लोक वहां ताजिया पर्व के समय मातम मनाते हैं। इसी वजह से दोनों की भावनाओं को धक्का लगता है और आगे चलकर अदालत में मुकदमा दायर किया गया। अदालत के फैसले के पश्चात् ''शिया खुश है कि सुन्नियों की कब्रे उखडेंगी और सुन्नी दुखी हैं कि उनके आत्मीयों की रूहें तडपेंगी : जब कि हाजी

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

अमीरूल्ला इसलिए दुखी है कि इतनी जमीन पर अब उनका कब्जा नहीं रहेगा और सिब्ते हसन इसलिए खुश है कि इतनी जमीन उन्हें अब जाकर मिली जिसके लिए कई पीढियों की प्रतिष्ठा दांव पर लग चुकी है।''[2]**(अब्दुल बिस्मिल्लाह—झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृ.183)** यहां इन उच्चवर्गीयों को मजहब और अपने बुजुर्ग हस्तियों की कब्रे उखडने का कोई दुख नहीं है। वे सिर्फ उस थोडी—सी जगह पर अपना कब्जा कर अपना स्वार्थ पूरा करने के कलए लड रहे हैं। न उनका मुहर्रम के ताजिए के मातम से ताल्लुक है, न अपने बुजुर्गों की कब्रों पर दिए जलाने और उन्हें उखडने से।

'मुखडा क्या देखे' उपन्यास के उच्चवर्गीय समाज के कई लोग अन्य जाति—धर्म के व्यक्ति को उपेक्षा और हिकारत से देखते हैं। उनकी जाति को लेकर कई अवांछनीय वक्तव्य करते हैं। दूसरों के धर्म में प्रचलित रीति, प्रथा परंपरा पर अक्षेप उठाते हैं और उन्हें अपने से निम्न साबित करते हैं। उन्हें उपने अधिकार और वर्चस्व में रखना चाहते हैं। पं.अशोक कुमार पांडे भी अपनी पढाई के दौरान बचपन से ही निम्न जाति के साथियों से बुद्धू पर टिप्पणी करते हुए कहता है, ''अरे, कटुवा है न', अशोक कुमार पांडे बडी हिकारत के साथ बोला, 'इन लोगों के सारे काम उल्टे होते हैं। हम लोग सीधे ढंग से हाथ ढोते हैं, ये लोग उल्टे ढंग से। हम लोगों के यहां सीधे तवे पर रोटी बनती है, इनके यहां उल्टे तवे पर। हम लोग बाल मुडाते हैं, ये लोग नूनी कटाते हैं। सुना नहीं है? हिंदुअन की फलान और मियन की दाढी..।''[3] (वही—मुखडा क्या देखे, पृ.121-122)

'दंगाई' कहानी का नायक बसंतू शहर में रहता है और वहां के हिंदू—मुस्लिम के सांप्रदायिक दंगों से प्रभावित होकर अपने गांव में दंगा खडा करना चाहता है। उसके वहां देखा है कि चौक—इलाके के गुंडे लोग अपनी ही जाति— बिरादरी में किस प्रकार गुंडई करते हैं। गुंडा मुच्छन जाति से मुस्लिम है और वह अपने पडोसियों की आर्थिक सुस्थिति पर जलता है। वह इस मुहल्ले में दंगा—फसाद कर अपना वर्चस्व जमाना चाहता है। इस बात से बसंतू प्रभावित होता है और अपने गांव में वह फसाद खडा करना चाहता है। वह शहर की उस स्थिति के बारे में सोचता है, ''चौक इलाके के मशहूर गुंडा मुच्छन खां ने मुसलमानों को सिर्फ इसलिए उकसाया था कि हरिप्रसाद साहू और हबीब मियां की आर्थिक सुदृढता उसकी आंखों में चुभने लगी थी। और पुलिसवालों की कृपा से उस महान् राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक योजना में वह पूरी तरह सफल हुआ था।''[4] (वही—रैनबसेरा, पृ.44)

इसी प्रकार आज भी जातीयता के आधार पर अपना वर्चस्व निर्माण कर उसका उपयोग अपने राजनैतिक कार्य में करते हुए कई जातीय संगठन दिखाई देते हैं।

'बैरंग चिठ्ठी' कहानी का चिठ्ठीरसा वहिद्दू मुस्लिम है। भारतीय प्रशासकीय व्यवस्था में भी जातीयता के बंधन निभाए जाते हैं। एक विशिष्ठ जाति या समाज के व्यक्तियों को उन्हीं की जाति—बिरादरी में डयूटी पर लगाया जाता है। इतना पढ—लिखकर, शैक्षिक चेतना आने के पश्चात् भी वहां के अफसर और कर्मचारी जातीयता के कोढ को मिटाने के बजाय उसे बढावा देते हैं। साथ ही एक निम्नजाति के मुस्लिम या डाकिया का काम करनेवाले वहिद्दू के लडके को 'कान्वेंट' स्कूल में प्रवेश नहीं दिया जाता है। तत्कालीन समाज में मुसलमानों की इतनी दयनीय दशा थी, जैसे हरिजनों की। उनसे छुआछूत तक नहीं की जाती थी और मुस्लिम मुहल्ले के अलावा अन्य मुहल्ले में रहने के लिए जगह ळाी नहीं मिलती थी। इतने कडे रूप से जातीता के बंधन निभाए जाते है। ''जाहिर है कि मुहल्ला मुसलमानों का है, क्योंकि वहिद्दू भी मुसलमान है। और अगर वह चाहे तो भी उसे किसी दूसरे मुहल्ले में मकान नहीं मिल सकता इस शहर में। यही नहीं चूंकि वह मुसलमान है इसलिए उसकी डयूटी भी मुसलमानों के मुहल्ले में लगाई गई है।''5 (वही, पृ.128) इस प्रकार गांव से शहर तक और नोकरी में डयूटी देते हुए जातीयता को ध्यान में रखा जाता है।

'अलिया धोबी और पावभर गोश्त' कहानी के अलिया के पिता ने अपना कपडे धोने का पुश्तैनी धंधा शुरू किया। धंधा चलने पर कुछ पूंजी जमा करने के पश्चात् अपनी बेटी रूकसाना की शादी तय की और शादी में अलिया के पिता यूसुफ ने अपनी जाति के उच्चवर्गीय शेख, पठाण, सैयद के यहां भी दावतें भेजी। इसी वजह से बिरादरी के सभी लोग सकते में आ गए और उन्होंने दावत लौटा दी। क्योंकि धोबी जैसी निम्न जाति के यहां ये उच्चवर्णिय लोग खाना

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

नहीं खा सकते थे। साथ ही इससे पहले कभी किसी ने इस प्रकार की न दावत दी, न कोई खाने गया। ये शेख, पठाण लोग इस निम्न जाति से छुआछूत तक नहीं कर लेते हैं, खाने की बात तो दूर की। बिरादरी में ''लडकी की शादी है और खाना नहीं खाते तो यही समझा जाएगा कि कन्यादान से बचने के लिए शेख–पठाणों ने दावत लौटा दी। इस समस्या ने उन्हें परेशान कर दिया। वे लोग काफी देर तक मिसकौट करते रहे, फिर यही लईक आलम साहब ने रास्ता सुझाया था 'धोबी के यहां खाने तो न जाएंगे, हां अगर उसे ऐसा ही शौक है तो आदमी पीछे पाव–पावभर गोश्त हमारे घरों में भिजवा दे। चाहे तो पाव–पाव भर आटा चावल भी भिजवा दे। हम उसे अपने यहां पकवा लेगे और दावत की रस्म पूरी हो जाएगी। जहेज जाकर लिखा आएंगे।''[6](वही, अतिथि देवो भव, पृ.13)

इसी प्रकार सिर्फ अन्य जाति–धर्म के ही नहीं तो अपने ही जाति–बिरादरीवाले अपने समाज के निम्न स्तर के लोगों से बुरा बर्ताव करते रहते हैं। उन्हें हिकारत से देखते हैं। उच्चवर्गीय लोग उनकी उपेक्षा, घृणा और अपमान करते हैं। इसीलिए जाति और बिरादरी में किसी प्रकार अंतर होता है, इसके बारे में बिस्मिल्लाह बताते हैं, ''मुसलमा और मुसलमान में भी फर्क होता है। जैसे हिंदू और हिंदू में फर्क होता होता है। कुढ हिंदू और कुछ मुसलमान एक जैसे होते हैं, उनके सोचने का ढंग, एक जैसा होता है। वे कुछ दूसरे हिंदुओं और दूसरे मुसलमानों से अलग होते हैं।''[7] (वही, मुखडा क्या देखे, पृ.33)

➢ ऊंच–नीच भेद और छुआछूत

मुस्लिम समाज में भी जातियों को उच्च, मध्य और निम्न स्तर में देखा जा सकता है। परंपरागत रूप में जिस प्रकार हिंदुओं में ब्राह्मण उसी प्रकार मुस्लिमों मे शेख, पठाण, सैयद अपने आपको उच्च जाति के समझते हैं। मुस्लिम समाज में अनेक उपजातियां, जैसे–धोबि, नाई, धुनिया, चुडिहार, जुलाहा आदि विविध रूपों में हैं। भारतीय समाज की इस जाति प्रथा को मिटाने के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं। इस जाति व्यवस्था में अपने ही जाति धर्म के अन्य व्यक्ति जो अपनी हैसियत तथा दशा के अनुसार काम करते हैं, उन लोगों को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती है और वे अधिक पिछड जाते हैं। इसी आधार पर ज्यादातर उनमें छुआढूत और उंच नीच का भेद किया जाता है। ''ग्रामीण अंचलों में ऊंच–नीच व छुआछूत का भेदभाव करनेवाली कुप्रथाएं सदैव विद्यमान रही हैं, जिन पर ग्रामवासियों का विश्वास होने के कारण स्वार्थी तत्व अनुचित लाभ उठाते हैं। अभावग्रस्त निम्न वर्ग हर हाल में संतुष्ट रहता है, क्योंकि उसने उंची जाति के भागवंतों की सेवा–सुश्रूषा को ही अपनी नियति और कर्तव्य मान लिया है।''[8] (डॉ.कलावती प्रकाश –हिंदी के आंचलिक उपन्यासों का लोकतात्विक अध्ययन, पृ.90)

बिस्मिल्लाह के 'जहरबाद' उपन्यास में कथानायक 'मैं' के अब्बा अपनी जाति में विद्वान और धर्म के ज्ञानी हैं। क्योंकि उन्हें कहीं शादी–ब्याह में निकाह पढने के लिए भी आमंत्रित किया जाता है, तब उन्हें अपने खानदान पर गर्व कहसूस होता है। उसी समय वे अन्य मुस्लिमों को उपने से छोटी जाति का मानते हैं। मैं कहाता है, ''एक शदी में निकाह पढने के लिए आमंत्रण मिलने पर वे मुझे लेकर न्योसापोंडी चले गए। वहां के मुसलमान छोटी जाति के थे और उनके यहां हिंदू समाज की सारी रीतियां परिपालित होती थी। यद्यापि उस समाज से अब्बा एक कट्टर मुल्ला की भांति ही घृणा करते थे।''[9] (अब्दुल बिस्मिल्लाह–जहरबाद, पृ. 44) यहां एक ही जाति के व्यक्ति उंच–नीच का भेद और एक–दूसरे के साथ कठोर व्यवहार करते हैं। न्योसापोंडी में रहनेवाली मुस्लिम जाति में अधिकतर हिंदू रीति–रिवाजों का पालन करने की वजह से उन्हें अपनी जाति से छोटी या निम्न मानकर उनके साथ कट्टर धार्मिक व्यक्ति की तरह व्यवहार किया जाता है। इसी उपन्यास में छुआछुत का भी वर्णन है। 'मैं' कैंप में काम करते समय हमेशा पानी पीने के लिए जाता है। वह मुस्लिम जाति का होने की वजह से उससे पानी छुआ न जाए इसीलिए पानी देनेवाला पटेल उसे दूर से पानी देता है। फुलझर के विवाह में सेवैया बनाई जा रही थी। उसी वक्त 'मैं' जाकर उस चारपाई के पैर को पकडता है, तो उसी समय सेवैया छु गई, सोचकर फेंक दी जाती और गोंड जाति में एक–दूसरे से छुआछूत नहीं की जाती है। उसका कडे रूप से पालन

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

किया जाता है। छुआछूत की वजह से मुस्लिमों और हरिजनों का एक समान स्तर है। आज भी गांवों में पिछडी मानसिकता के कारण वहां के मुस्लिमों में छुआछूत के बंधन हैं।

'मुखडा क्या देखं' उपन्यास में अली चुडिहार का बेटा बुद्धू उर्फ रफी अहमद घर से भागकर गांव के ही पासियाने के तोते पासी की लडकी भूरी से विवाह करता है। परंतु पासी इन मुस्लिम चुडिहारों से निम्न जाति के होने के कारण उससे छुआछूत नही की जाती है। बुद्धू अपने घर बहुत दिनों के पश्चात् आता है, तो उसके ही घर में उसकी पत्नी भूरी को लेकर छुआछूत का बतंगड निर्माण होता है। क्योंकि वे अपने ही समाज के अन्य लोगों से डरते हैं कि उन्हें बिरादरी से बाहर कर उनका हुक्कापानी बंद किया न जाए। रनिया अपने बेटे बुद्धू को समझाने का प्रयास करती है, ''बुद्धू मन में कुछ खियाल न करना, बहू को अभी चूल्हा—सिन से दूर ही रखना है। तूं तो जानते ही हो सत्तार की अम्मां को पता चला तो एक हाथ ककरी अउर नौ हाथ बीजा करेंगी। बस एही तोंसे कहना रहा। चलो खाना खाओ बहू के साथ ताहिरा खा लेगी उ अभी बच्ची है।''[10] (वही, मुखडा क्या देखे, पृ. 172) अपने परिवार की बहू निम्न जाति की होने की वजह से रनिया पहले उसे चूल्हा—चौंका करने से मना करती है क्योंकि वह सत्तार की अम्मां से डरती है कि वह पूरे गांव में ढिंढोरा पीटती घूमेगी और इसी वजह से उनकी बेइज्जती होगी।

अल्ली चुडिहार कुछ कर्ज मांगने के लिए गांव के उच्चवर्गीय ब्राह्मण पं.रामवृक्ष पांडे के घर गया था, उसी समय उन्होंने उल्ली को बिनावजह पीट दिया था। यह शिकायत करने के लिए वह जवाहरलाल जी से मिलने इलाहाबाद जात समय रास्ते में उसे बडी प्यास लगती है, तो वह एक दुकानदारिन से लड्डू खरीद लेता है और वहीं बैठकर खाने के बाद दुकानदारिन से पानी मांगने पर वह अल्ली चुडिहार से कहती है '' पी लेबी कि पियासीं?.. दुकानदारिन ने पूछा तो अल्ली अहमद समझ गया इस सवाल में जाति धर्म का रहस्य छिपा होता था। जो लोटा छूने लायक होते थे, वहीं लोग खुद से पानी पीते थे। हरिजन और मुसलमान इस कोटि में नहीं आते थे।''[11](वही, पृ. 37)

'अलिया धोबी और पाव भर गोश्त' कहानी में इस्लामी मसावत के अनुसार इस्लाम में सभी को एक जैसा बराबरी का दर्जा दिया गया है। वहां न कोई बडा है न छोटा। लेकिन यह बात सिर्फ कहने के लिए है। प्रत्यक्षत: हम अलग ही देख्ते आए हैं क्योंकि ''अलम में ऐसा नहीं है। जो शेख हैं, जो सैयद हैं ओर जो सिद्दीकी और खान हैं, वे नाइयों, धोबियों और जुलाहों, धनियों से नफरत करते हैं। जैसे किसी जमाने में ब्राह्मण और क्षत्रिय, शूद्रो से नफरत करते थे। .. . इस मुल्क में शूद्रों ने इसीलिए तो इस्लाम को कबूल किया था कि उन्हें बराबरी का दर्जा मौजूद है। हमारे गांव में धोबी बहुत है। इसमें शक नहीं कि ये मुसलमान है, कममागो हैं। लेकिन यह हमारी चारपाइयों पर नहीं बैठ सकते। हम इनके यहां खाना नहीं खा सकते। सोचिए, यह कितना बडा जुल्म है? क्या औहजरत ने हमें सिखाया है...।''[12] (वही, अतिथि देवो भव, पृ. 10—11) तत्कालीन समाज में जैसे हरिजन, दलितों के शोषण के कारण उनकी दयनीय दशा थी, वैसे ही निम्न जाति के मुस्लिमों की थी। 'अतिथी देवो भव' कहानी का ब्राह्मण परिवार अपने पडोस में रहनेवाले मिश्रीलाल गुप्ता के यहां आए अतिथि का बहुत ही अच्छा स्वागत करते हैं। क्योंकि उन्हें लगता है कि वह व्यक्ति सलमान साहब गुप्ता खानदान से ही है। परंतु बातों—ही—बातों में पांडे उस अतिथि महोदय से पूछते हैं, ''आप भी गुप्ता हैं? .. ''जी नहीं''.. ''ब्राह्मण हैं?''.. 'नहीं मैं मुसमान हूं, मेरा नाम मुहम्मद सलमान है।'' .. उन्होंने अपना पूरा परिचय दिया और रोटी के आखिरी टुकडे में सब्जी लपेटने लगे, पांडे जी ने अपनी स्त्री की ओर आंखें उठाई तो पाया कि वह खुद उनकी ओर देख रही थी। ऐसा लगा कि दोनों ही एक—दूसरे से कुछ कर रहे हैं, पर ठीक ठीक कह नहीं पा रहे हैं।कृसलमान साहब अगली रोटी का इंतजार कर रहे थे, लेकिन स्त्री स्टोव के पास से उठकर भीतर चली गई थी और कुछ ढूंढने लगी थी। सलमान साहब आम खाने लगे थे। स्त्री जब बाहर निकली तो उसके हाथ में कांच का एक गिलास था और आंखों में भय।''[13] (वही, पृ.146—147) यहां ब्राह्मणों का मुस्लिम जाति के प्रति दृष्टिकोन किस प्रकार घृणास्पद और तिरस्कृत है यह दिखाई देता है।

'अधर्मयुद्ध' कहानी के सेठ रामचंद्र एक बहुत बडे अमीर व्यक्ति हैं। उनके कई उद्योग—व्यवसाय हैं और उनके यहां आनेवाले हर व्यापारी और अन्य व्यक्तियों की रहने की

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

सुविधा एक हालनुमा भंडारे में की गई है। उनके कॉलेज के कई अध्यापक भी वहीं गद्दी पर पडे रहते हैं। उनके यहां उन्य जाति–धर्म के लोगों को कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है। साथ ही वहां के अध्यापकों को उनके यहां से ही राशन–पानी खरीदना पडता है। क्योंकि उन्हें वेतन की जगह अपनी जरूरत की चीजें वहां मिलती हैं। और उनके यहां आनेवाले व्यापारियों से लेकर उनके कॉलेज के अध्यापकों को वहीं भंडारे में ही खाना खाना पडता है। खाना खाकर वे वहीं गद्दी पर लुढक जाते हैं, फिर भी वहां जाति प्रथा और छुआछूत के बंधन कडे हैं। इसीलिए इतना सब जानने के पश्चात् ''यहां आते ही मैंने सर्वत्र यह प्रकट कर दिया है कि मैं मुसलमान हूं। अत: सब होशियार हो गए हैं। भंडारे में खाना परोसनेवाला मेरे पत्तल पर दूर से ही रोटिया फेंक देता है और सब्जी का लोंदा कुछ इस अंदाज में गिरता है, जैसे गाय गोबर कर रही हो। कॉलेज में पानी पीने के लिए मेरे वास्ते एक कांच का बिलास मंगाकर अलग रख दिया गया हे। अन्य लेक्चरर्स के गिलासों में पानी पीते हैं। इस प्रकार मुझे एडजस्ट करने की पूरी व्यवस्था कर ली गई है।''[14] (वही, रैनबसेरा, पृ. 72) इस प्रकार एक मुस्लिम अध्यापक की दयनीय दशा दिखाई देती है।

'ग्राम सुधार' कहानी के टी.एन.सिंह और चानिका के माध्यम से जातिभेद और छुआछूत की समस्या हमारे सामने प्रकट होती है। एक ओर हिंदू और मुस्लिमों में मिलकर देश को आजादी दी है, यह बात सिंह साहब प्रकट करते हैं। लेकिन चानिका इसे गलत मानता है। वह हिंदू–मुस्लिमों में कितीनी कट्टरता के साथ जातिभेद को निभाया जाता है, इसके दर्शन कराता है। एक शहरी बाबू को देखकर उसका दीक्षा–ज्ञान उमड आता है और वह शास्त्रार्थ के मूड में आ जाता है। और सिंह साहब मनुष्य और आदमी का फर्क पूछते हैं, तो चानिका शुरू हो जाता है, ''मनुष्य और आदमी में वही अंतर होता है जो धर्म और मजहब में है।'' धर्म और मजहब में क्या अंतर है? वही अंतर है जो जल और पानी में है। जल और पानी का अंतर क्या है? जल होता है गंगा का, जल होता है घडे का, जो पवित्र होता है, शुद्ध होता है। और पानी होता है टोंटिदार लोटे, यानी बधने का, जिससे मुसलमान लोग उज्जू बनाते हैं और नाक छिनकते हैं।''[15] (वही, अतिथि देवो भव, पृ. 125) यहां राजनीतिक नेता सामान्य व्यक्ति को बहकाकर उनमें संघर्ष निर्माण करने के लिए धर्म और मजहब का सहारा लेकर व्यक्ति–व्यक्तियों के मन में एक दूसरे के प्रति घृणा निर्माण करते हैं। इसी प्रकार आपस में एक साथ रहनेवाले व्यक्ति के मन में जहर घोलकर उन्हें विभक्त करने का, उनमें मजहबी झगडा निर्माण करने का प्रयास चंद उच्चवर्गीय और राजनीतिक लोग करते हैं और उन्हें झगडने पर मजबूर कर स्वयं उसका फायदा उठाते हैं।

एक ही जाति के अंतर्गत अनेक उपजातियां होने के कारण उनमें उंच–नीच के भेदभाव हैं। अपनी ही जाति–बिरादरी की व्यक्ति को अपने से नीच समझा जाता है और उनके साथ उपेक्षापूर्ण क्रूर व्यवहार कर उन्हें मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कमजोर करते हुए हमेशा अन्य उच्चवर्गीय उनका उपयोग अपने लिए करते हैं।

➢ जाति प्रथा और छुआछूत विरोध

आधुनिक युग में शैक्षिक विकास, व्यक्ति स्वातंत्र और समाज में फैली अपनत्व की भावना के कारण अधिकतर इस जाति प्रथा और छुआछूत की समस्या का विरोध होता है। मात्र ग्रमीण समाज में इस प्रथा का या समस्या का हल निकलना मुश्किल है। क्योंकि वहां की पुरानी पीढी इस प्रथा को बदलने की मानसिकता में नहीं है। परंतु आज की पीढी सर्व धर्म समभाव की स्थापना कर एक साथ रहने में ही अपने–आपको सार्थक और भाग्यशाली समझती है। कई राजनीतिज्ञ और उच्चवर्गीय समाज के लोग इनमें जातिय और धार्मिक झगडे निर्माण कर उन्हें चैन की सांस लेना मुश्किल कर देते हैं।

अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में जाति प्रथा और छुआछूत का कडा विरोध हैं। उनके 'समर शेष है' आत्मकथात्मक उपन्यास का नायक 'मैं' अपनी पेट की भूख से बेहाल है। उसका कोई घर परिवार नहीं है। भाई के घर भाभी उसके साथ घृणापूर्ण व्यवहार करती है। साथ ही उसकी सौतेली बहन तथा उसके ससुरालवाले उसके साथ बुरा सलूक करते हैं और उसे घर से निकाल देते हैं। उसी समय वह भूख से परेशान था। अत: वह नौटंकी में काम करनेवाले चमरौटी के साथ छोटू के घर जाता है। छोटू की बहन खाना बना रही थी। छोटू से कहता है, 'मुझे रोटी

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

खिलाओ, भूख लगी है।' .. वह मेरा मुंह ताकने लगा और उसकी बहिन के हाथ रूक गए।.. 'हम लोगों का छुआ खाओगे?''.. ''क्यों? क्या हुआ? क्या तुम लोग मनुष्य नहीं हो?'' मैंने लगभग उत्तेजित होकर यह बात कही और छोटू का चेहरा खिल उठा।''[16] (वही, समर शेष है, पृ. 57) छोटू के परिवारवाले उसकी दासतां सुनकर उसे अपने यहां रहने का आग्रह करते हैं। छोटू के पिताजी सनई की रस्सी बनाते हुए कहते हैं कि बैटा हमारे यहां जो चटनी—रोटी मिलेगी वहीं खाकर रहो।

कथानायक बी.ए.की पढाई के दौरान कॉलेज के हरिजन छात्रवास में रहता है। उसी समय कई सवर्ण जाति के छात्र उसके पास आकर उसे रामायण के प्रोग्राम में आने का निमंत्रण देते हैं। क्योंकि उन छात्रों को लगा था कि वह एक कट्टर मुसलमान है, इसीलिए वह इस कार्यक्रम में नहीं आएगा। उसे भी आश्चर्य हुआ कि यह सवर्ण छात्र इस हरिजन छात्रावास की ओर कभी देखते तक नहीं और आज वे छात्र उसके कमरे में आकर उसे निमंत्रण दे रहे हैं। ''हम तुम्हें बुलावा देने आए हैं। आज रामायण का प्रोग्राम है, मंदिर में। आओगे न।''.. ''जरूर आउंगा। यह तो बडी खुशी की बात है।.. एक लडके ने पोल खोली, तो बतियानेवाला लडका झेंप गया।.. मैंने उसे सहज बनाया, ''मैं खाली कटुवा मुसलमान नहीं हूं, समझे। औ मैं पंजीरी भी सबसे ज्यादा खाउंगा।''[17] (वही, पृ. 85)'मैं' के रूप में स्वयं लेखक ने अपने आत्मकथात्मक उपन्यास में जाति प्रथा और छुपाछूत के कारण उसे सवर्ण छात्रों के बराबर न रखकर, हरिजन छात्रावास में रहना पडता है। तत्कालीन समाज व्यवस्था में हरिजन और मुसलमानों की दशा एक जैसी थी।

'मुखडा क्या देखे' उपन्यास के पं. रामवृक्ष पांडे की कन्या लता पारिवारिक कलह के कारण अपने गांव बलापुर का पिता का घर छोडकर शहर में जाकर रही है। वह शहर में पढ—लिख कर अपने ही गांव के स्कूल में अध्यापिका बनकर आती है। लेकिन वह माता—पिता के घर कभी नहीं जाती। स्कूल की अध्यापिका होने के कारण वह आधुनिक विचारों से प्रभावित है। ब्राह्मण कन्या लता बुद्धू चुडिहार जैसे निम्नजाति के व्यक्ति के दवाखाने में जाकर सरदर्द की गोली लेकर वहीं बैठकर पानी के साथ ले लेती है। उसी समय बुद्धू भी चौंक जाता है, और बवाली से पानी का इंतजार करने को कहता है, ''हमारे यहां का पानी तो ये पिएगी नहीं।.. क्यों? पानी पीने में क्या बुराई है? 'देखो बुद्धू अब ये बाते बहुत पुरानी हो गई।' .. ' शहर में तो सभी लोग सभी—सभी कुद खा—पी रहे हैं। अंडा अब रामलड्डू बना गया है और मछली जलतराई।''[18] (वही, मुखडा क्या देख, पृ. 203)यहां लता के आधुनिक विचारों के साथ ही नगरीय परिवेश में आए परिवर्तन की ओर लेखक ने ध्यान आकृष्ठ किया है।

बिस्मिल्लाह की कहानियों में भी जाति प्रथा और छुआछूत का विरोध है। उनकी 'अतिथि देवो भव' कहानी के सलमान साहब के पडोस में रहनेवालला मिश्रीलाल गुप्ता नामक युवक बहुत दिनों से पूरे कस्बे में आधुनिक और क्रांतिकारी विचारों के लिए प्रसिद्ध है। वह अपने खानदान का पहला युवक है, जिसने मुस्लिमों के होटल में चाय पीना और मांस खाना आरंभ किया है। 'अलिया धोबी और पाव भर गोश्त' में अलिया मुस्लिम जाति के उच्चपदस्थ शेख, पठाण, सैयद के विरोध में जाति प्रथा तोडने के लिए प्रयत्न करता है और अपनी बहन की शादी में उन्हें दावत देता है। 'सुलह' कहानी का महादेव निम्न जाति का है, लेकिन वह गांव के सेठ को पायलागी की जगह नमस्कार करता है और अपने पिताजी को हमेशा काम में जकडकर रखनेवाले साहूकार को थप्पड मारता है।